Date: / / Page no:

(background music ... तालियो की आवाज
तबला की आवाज)

कवि .. => आया वसंत का पर्व महान, 2 कोयल
.... Song ...
(background music.)

राजा => आहा! (वाह) कविराज जी की कविता ने तो
उपवन मे जाकर वसंत ऋतु का आनंद प्राप्त
करने की इच्छा उत्पन्न कर दी है।
हम चाहते है कि हम सब वन-2 मे घूमे और
जलाशय मे जल क्रीडा करे। वसंत ऋतु के उत्सव की
सूचना रनिवास मे भी दे दी जाए

मंत्री => जो आज्ञा महाराज।
(background music ... सभा विसर्जित हो गई
सुनकर नृप आदेश
रनिवासो मे भी तुरंत पहुंच गया संदेश ?
=(यहां सभा समाप्त होती है राजा सहित सभी सभाकक्ष
से चले जाते है।)
(तालियो की आवाज)
आया वसंत का पर्व ... music

Date: / / Page no:

राजा सहित सभी नंदन वन मे-

राजा → हे वीर ! नंदन वन की सोभा को देखकर तो ~~ऐसा~~ ऐसा प्रतीत होता है। जैसे इन्द्रराज और बसंतीबाला को प्यार हुआ

पंक्षीओ को देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे बाग मे स्वागत गीत बाज रहे हो,

देखो ! इसने हमे पुकार रहे है, आओ जल्स क्रिडा करे

(~~Mu~~ background music —)

— आया बसंत का पर्व

(राजा मंत्री मंत्री आनंदित होते हुए आगे बढते है। तभी सतभामा आदि नेमिकुमार की भाभीओ की आगवानी)

सभी का नाच-गाना होता है।

(Music → सत्भामा और पटरानियाँ तैयार भई चित हुलसाय सब झूल रही संग मे. — वाध्य यंत्रो की आवाज)

· सतभामा → अरे देवरजी ! यहाँ तो आइए हम रंग नही लगाऐंगे।

दुसरी भाभी → अरे आइए, तो हम आपसे कुछ पूछना चाहते है,

नेमीकुमार → हा हा भाभी ~~पूछिए~~ पूछिए)

Date: / / Page no:

Music = छुपा देखत रह जाते ... music)

भाभी → आप शादी कब करोगे ?

नेमीकुमार → जब मेरी इतनी सारी भाभीयां है तो मै शादी क्यो करु ?

भाभी - देवर जी हमे यूँ न बहकाइए। आज तो हम सच जानकर रहेंगे।

नेमीनाथ → भाभी मुझे विवाह की इच्छा ही नहीं है,

(Music)

भाभी → देवर जी यदि सब ऐसा कहने लगे तो हम कन्याओं का क्या होगा। हम कन्याऐ कुंवारी ही रह जाएंगी।

नेमीकुमार → भाभी! नारिया अबला थोड़ी ही होती है नारियां स्वतंत्र द्रव्य है। चाहे तो नारिया भी आत्मानुभूती करके सफल हो सकती है।

स्नानी पा

(Music)

Date: / / Page no:

रुक्मणी = सादा जीवन तो इनको ही है।
भाभी = देवर जी ये योग ज्ञान की बातें अपने तक
ही रखियेगा।
सत्भामा - सारे संसार को मत बना दीजियेगा।
तीनो = नहीं तो नर नारी के जीवन का अंत
हो जायेगा।
(Music - श्रीकृष्ण सह रुकमणी खेले संग मे
होली - - खेलो संग मे होली

(दूसरा Part खत्म)

~~[illegible]~~ Part = 3

नेमीकुमार = भाभी लो मेरी धोती धो दो
~~रुकमणी~~ सत्भामा - न देवरजी आपकी धोती मे न
धो सकती।
नेमीकुमार = भाभी धोती धुलने को ही तो कह
रहा हूँ।
~~सत्भामा~~ ~~रुकमणी~~ => आपकी धोती मे नही धोऊंगी मैं,
तो उनकी धोती धोती हूँ। जो नागसैया पर सोते है।
धनुष धारण करते है। शंख बजाते है।

नेमीकुमार => अब ये कौन सी बड़ी बात है
भाभी।

Date: / / Page no:

~~रुक्मणी~~ सतभामा → तो ~~छ~~ फिर कर दिखाऊं। ये सब नेमीकुमार ~~के~~ अच्छा तो ऐसा है। ठीक है
(दोनो का प्रस्थान होता है।)
(back ground मे बिजली बादलो की आवाज)
(भयानक पार्श्व संगीत)
(तीव्र संशख का सोर चारो ओर हडकंप)

(श्रीकृष्ण क्रोधित स्वर मे)
- ~~ऐसा~~ ये कौन है काल ने किसको बुलाया है। या वो

दास → महाराज ! ये नेमीश्वर है जो सबकी आंखो के तारे है। आप सांत हो जाए महाराज
कृष्ण → हे वीर। उसने ऐसा क्यों किया?

दास → अब क्या कहूं महाराज जब आप सूखे वस्त्र बदलकर निकले तब आपके पीछे - २ नेमीश्वर भी अपने गीले वस्त्र पटरानी सतभामा को यह कहते हुए दे दिये कि इन्हे धो डाले और बदले मे जो चाहे मांग ले।
इस प्रकार पटरानी सतभामा के अपमान जनक ~~अप~~ शब्द से रुष्ट होकर नेमीश्वर ने अपनी शक्ती शक्ति का प्रदर्शन किया है।

Date: / / Page no:

कृष्ण → ओह, मुझे तुरंत ही नेमी के पास
जाना होगा।
(Background music तबलादि का आवाज)
बॅक से श्रीकृष्ण निकल जाते है।

प्रजा → अरे यह क्या हो रहा है धरती क्यो
हिल रही है।
बच्चो भयभीत हो रहे है इसे बंद करो।
(तीव्र भयानक पार्श्व संगीत)
(तीव्र संगीत → शंख वाद्ययंत्रो की भयानक आवाज)
(प्रजा का कोलाहल)
श्रीकृष्ण का आगमन मधुर पार्श्व संगीत)

श्री कृष्ण → प्रिय अनुज, ये तुमने क्या किया।
तुम तीर्थंकर हो, जगत पूज्य हो। अद्भुत
हो प्रतिभाशाली हो इस समय इस जगत मे सर्व
श्रेष्ठ एवं अद्भुत बलशाली हो।
मै तुम्हे समझता हूँ नारी जन तुमको क्या जाने
वे होती है स्वयं पति भक्ता। वे तुम्हारी महिमा
क्या जाने
(मधुर पार्श्व संगीत)
सतभामा → हमसे बहुत बड़ी भूल हो गई।
देवर जी हमारे अपराध को क्षमा कर
दीजिए। क्षमा कर दीजिए देवर जी
संगीत

(1) निशा जैन

Date: / / Page No.:

(Back ground Music . . . . . . ~~)

2 min. . .

श्रीकृष्ण :- नेमी के रहते हुए मेरा राज्य निष्कंटक नही जान पड़ता।
(रूककर) सतभामा के मुख से मेरी इतनी-सी प्रशंसा उसे सहन नहीं हुई।
वो मेरी विभूति को देख मुझसे जलता है। (मन में सोचते हुए . . . . .

BG. (आज उसने इतना तांडव मचा डाला तो किसी दिन मुझसे मतभेद होने पर
युद्ध के लिए भी तैयार हो जायेगा। और वह मुझसे बलशाली है और
अपने आगे मुझे कुछ नहीं समझता है। पर... ये क्या बात हुई
यदि सतभामा ने अपमान किया था तो मुझसे आकर कहता।)

नेमीकुमार :- भाभी के छोटे से मजाक पर मैंने आज जो व्यवहार किया।
क्या वो उचित था? और भाभी ने मुझे बलहीन कहाँ कहा था
वो तो खाली अपने पति की प्रशंसा कर रही थी।

सतभामा :- मेरे जीवन को धिक्कार है। मैंने कुछ भी नहीं सोचा और
जो मन में आया कह दिया।

श्री कृष्ण :- और फिर पटरानी को कोई धोती धोने का काम देता है क्या?
क्यों किया उसने ऐसे जब वहाँ हजारों सेवक खड़े थे। अर्द्धचक्री
की पटरानी को कोई धोवन का काम बताता है क्या?

विशाल जैन

(2)

Date: / / Page No.:

श्री कृष्ण :- अरे नहीं! मैं ~~ऐसा क्या~~ भी ये सब क्या सोच रहा हूँ। नेमी तो मेरा प्रिय अनुज है। हम दोनों में भेद ही क्या है।

सत्यभामा :- यदि युवराज के मन में मेरा कोई सम्मान नहीं रहा तो न जाने प्रजा भी मेरे बारे क्या सोचती होगी। कृष्णराज भी तब से कितने चिंतित दिखाई देते है।

तब ब तब

नेमीकुमार :- अन्याय ... (रूककर) ये अन्याय नहीं तो और क्या है? अपनी वीरता दिखाने के लिए, खुद को महावीर कहलाने के लिए आज मैंने व्यर्थ ही कितना तांडव किया। जनता, पशुपक्षी सभी के मन में भय उत्पन्न कर दिया।

श्री कृष्ण :- युवराज भी क्या सोचते होगें। लेकिन मैं क्या करूं राजनीति कहती है कि कभी किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए। चाहे वो पुत्र हो या भाई। अवश्य ही एक दिन युद्ध स्थल में नेमी से लड़ना होगा। क्यों न एक बार ही अखाड़े में अपने और नेमी के भुजबल का नाप लगाऊं। (हाँ ऐसा ही करूंगा।)

(Back ground Music .... वाद्य यंत्रों के साथ।

(दरबार का दृश्य)

श्री कृष्ण :- ऐसा अहसास होता है। कि हमारे शासन में चहुँओर शांति है। ~~इसलिए~~ अतः कोई मुकदमा और पेशी नहीं।

~~सैनिक~~ मंत्री :- उचित कह रहे हैं महराज।

श्री कृष्ण :- अरे! नेमी तुम इतने उदास क्यों हो। तुम्हें उदास देखकर मेरा मन भी उदास हो जाता है। हम चाहते है कि हम सब पुनः उपवन में चलें। आज जल क्रीड़ा नहीं करेंगे। मुक्कर घुमायेंगें, दंडबैठक करें और कुश्ती लड़ेगें।

(दरबार का दृश्य)

श्री कृष्ण :- ऐसा अहसास होता है। कि हमारे शासन में चहुँओर शांति है।
~~इसलिए~~ अतः कोई मुकदमा और पेशी नहीं।

~~सैनिक~~ मंत्री :- उचित कह रहे हैं महराज।

श्री कृष्ण :- अरे! नेमी तुम इतने उदास क्यों हो। तुम्हें उदास देखकर मेरा मन भी उदास हो जाता है। हम चाहते हैं कि हम स्वजन पुनः उपवन में चलें। आज जल क्रीड़ा नहीं करेंगे। मुग्दर घुमायेंगे, दंडबैठक करेंगे और कुश्ती लड़ेंगे।

③ विशाल जैन
Date: / / Page no:

(खोपते हुए)
नेमीकुमार :- भ्राता श्री मुझे आज तक समझ ही नहीं पाये। उन्हे मेरे रहते अपना राज्य निष्कंटक नहीं जान पड़ता अतः मुझसे लड़कर अपनी शक्ति आजमाना चाहते है।

नेमीकुमार, श्री कृष्ण से कहते हुए :- नहीं भ्राता। भाई- भाई में कुश्ती हो ये शोभा नहीं देता।

श्री कृष्ण हँसते हुए :- अरे! नेमी हम सच-मुच थोड़े ही लड़ रहे है। हम तो बस मनोविनोग के लिए ही कुश्ती लड़ेंगे।

नेमीकुमार :- नहीं भ्राता, भाई-भाई में लड़ाई कैसी भी हो शोभा नहीं देती। वैसे भी मैं सदा शांत निराकुल रहना चाहता हूँ। मुझे जीत-हार दोनों एक जैसी ही प्रतीत होती है। आप तो मेरे बड़े भाई यादव कुल के कुलभूषण है। ये राज्य आपका है और आपका ही रहेगा।

① मंत्री :- नेमीश्वर सही कह रहे है महाराज भाई-भाई में लड़ाई कैसी-भी हो मन को प्रसन्न नहीं करती।

② मंत्री :- जी! आप लोग न लड़े।

③ पर नेमीश्वर पूरी सभा यहाँ उपस्थित है अतः हम सभी आपके बल का प्रदर्शन करना चाहते है।

④ मंत्री :- भाई-भाई न लड़े ये तो ठीक है। पर हमें तो अवसर दे।
(सभी सभा में उपस्थित :- हाँ-२ हमें तो अवसर दे।)

नेमीकुमार :- यदि आप लोगों की ऐसी ही इच्छा है तो इसके लिए रण में जाने की ~~जरूरत है~~ क्या आवश्यकता है लिजिए मेरे इस पैर को हिलाकर दिखा दीजिए। (सभी हँसते है।)

(4)

विशाखा और

Date: / / Page no.

(i) मंत्री आता है और कोशिश करके गिर जाता है।)

(i) मंत्री: लगता है 2 दिन से रोटी नहीं खाई।

(2) मंत्री आता है कोशिश कर हार जाता है)

(i) मंत्री: कहता है लगता है अति भोजन कर लिया। है

(3) मंत्री पहले दंड बैठक करता है, पुशअप लगाता है। फिर एक अंगुली से कोशिश करता है। फिर एक हाथ से, फिर दोनों हाथों से और गिर जाता है।)

।

समस्त सभा मिलकर भी उसे हरा नहीं पाई। लेकिन उसने अपनी जीत पर घमण्ड नहीं किया, अपनी विजय पर हर्षित नहीं हुआ। फिर भी न जाने क्यों मुझे अपना अपमान महसूस हो रहा है आज भी आदर सहित उसने मुझे सिंहासन पर बिठाया था। अरे! छोटा भाई बलवान है ये तो सौभाग्य की बात है। क्या मैं इसकी उन्नति से जलता हूँ, क्यों मुझे उसकी उन्नति बरदाश्त नहीं होते। बलदेव मेरे भ्राता हैं मैं उनसे बलशील हूँ। मैं राजा हूँ (सहन) लेकिन इन्होंने ये कभी नहीं सोचा कि मैं अपने छोटे भाई का सेवक क्यों बनूँ। मैं ये सब क्या सोच रहा हूँ? लेकिन मैं क्या करूँ, जब भी मुझे अपना अपमान महसूस होता है मेरा रक्त खौल उठता है, मेरा सीना फटता है, मैं पागल सा हो जाता हूँ मुझे ही कुछ सोचना होगा - (रुककर) शरीर से वो भले ही मुझसे बलशाली है पर बुद्धि में वो मेरे समान नहीं टिकता। नृप वही बनता है जो राजनीति जानता है मुझे कोई ऐसी चाल चलनी होगी जिसे कोई समझ न पाए। मैं ऐसा ही करूँगा। निश्चित ही राजनैतिक मेरा मनोरथ पूरा होगा। वैरागी नेमि हिंसा को देखकर निश्चित ही इससे वैराग्य को धारण कर लेंगे।

नेमिकुमार =>

भ्राता -- भ्रात --

श्रीकृष्ण =>

आओ नेमि आओ। यदुकुल भूषण आपकी वीरता व धीरता को देखकर मन प्रसन्न हो गया। अचानक ये भान हुआ कि आप युवा हो गये हैं अतः आपके विवाह के सन्दर्भ में सोचना चाहिए (थोड़े-थोड़े शर्माये, थोड़े-थोड़े हर्षाये) गाना (नेमि शर्माते हुए) मुझे आपका उत्तर मिल गया है नेमि, अब आप जा सकते हैं (शादी संगीत)

(राजुल के पिता का दरबार, कृष्ण आते हुए)

श्रीकृष्ण => महाराज (हाथ जोड़कर)

Date :   Page :

पिता = प्रणाम स्वीकार करे वासुदेव ।
कृष्ण = महराज ,आपने हमारे अनुज नेमीश्वर के बारे में तो सुना ही होगा , वह हमसे भी बलवान ,वीर्यवान , चरमशरीरी इसी भव से ~~मोक्ष जाने वाले~~ तीर्थंकर होने जा रहे हैं वह अभी और अविवाहित हैं आपकी पुत्री राजमती के लिए ~~सर्व~~ श्रेष्ठ,योग्य वर, आपकी पुत्री राजमति भी उनके योग्य हैं अतः यदि आपकी सहमति होतो तो --- (बात काटते हुए)
पिता - यदुराज --- ये हमारा सौभाग्य है नेमीश्वर सा श्रेष्ठ वर राजुल के लिए वर रूप हमें प्राप्त हो रहा है राजुल का अहो भाग्य , हम अभी राजुल को बुला लेते हैं और उसकी राय भी जान लेते हैं , ये लीजिए (इशारे से) राजुल भी यही आ रही है

श्रीकृष्ण = राजकुमारी राजमति , हम राजकुमार नेमीश्वर के लिए आपके पिता से आपका हाथ माँगने आये हैं क्या आपको यह संबंध स्वीकार हैं (घर में खुशियां छाय गई संगीत)

राजुल => चरम शरीरी नेमीश्वर मेरे अपने होंगे ,पर वो दिन आयेगा कब ।
दासी (शारदा) से) शारदा देखो तो, तुम्हें नही लगता कि सूर्य बहुत धीरे-धीरे चल रहा है
(दासी) - नही तो ---
राजुल => तो फिर मुझे ये दिन दो-दो दिन जैसे क्यों प्रतीत होते हैं

दासी - कुछ खालो राजुल

राजुल =

30 - 40 Aagam jain

नेमी
~~कान्हा~~ - पता नहीं मुझे कुछ अच्छा क्यों नहीं लग रहा,
Date: / / Page no:
मन इतना चंचल हो गया है। अभी मैं उससे मिला नहीं मैंने उसे देखा नहीं और मन है जो सदा उसे ही देखा करता है।

(Back Gr. Music - ....)

राजुल - तारा, मेरा तन यहाँ स्थित है, ~~मन मन~~ और मन नेमी में लगा हुआ है। प्राणनाथ नेमी के बिना अब मैं जी न सकूँगी। देखो ये बात किसी से कह मत देना क्या तुम उन्हें बुला सकती हो? लो मैं तो भूल ही गई, तुम उन्हें कैसे बुलाओगी क्योंकि वो तो मेरे मन में ही छुपकर बैठ गए है।

नेमी -
~~कान्हा~~ - कैसी होगी राजुल, सुना है बहुत शान्त, गंभीर और बहुत बुद्धीशाली है। तब तो हमारा मिलन कितना सुंदर और जीवन कितना सुलझा हुआ होगा।

(Music ....)

~~mus~~
~~कान्हा~~ नेमी
मन उस दिन को तरसा करता, जब बाला का संगम होगा मन शीतल, शान्त, सफल होगा - कितना आनंदित मन होगा।

राजुल :- किस प्रकार विविध क्रीडाओं में, जीवन की रेखाएँ ....
प्रेमामृत से भरी हुई आँखे, तभी तो रीतेंगी।

~~आप्त~~ नेमी - स्नेहमयी हम दोनो की आरवे जब 4-4 होगी, बाते होगी, धड़के होगी, क्रियाये बार-बार होगी

Date: / / Page no:

राजुल - स्वामी तुम मेरे मन मे घुपकर क्यो बैठ गये हो सामने आओ, मै तुम्हे कैसे देख पाऊगी?

music बाजे है ---___ (तबले की voice ---)

(बीता -- समय बीता ___

आरिवरकार वह दिन आयी ही गया

बाजे है --- music (B.G. voice ......)

(पशु की आवाज . ______)

नेमी - अरे भाई जरा देखो तो ये पशुओ की करुण आवाज कहा से आ रही है, ये तो पशुओ के घर लौटने का समय है।

मंत्री: युवराज, आपकी बरात निकल रही है। अतः यदुपति कृष्ण के आदेशानुसार इन सारे पशुओं को रोककर रखा है

नेमी - लेकीन भ्राता श्री ने ऐसा क्यो किया है, वो जानते है ये उचीत नही है फिर भी...

Date: / / Page no:

मन में सोचते हुए

(नेमी :- ओ, मेरे रहते भ्राताश्री को अपना राज्य निष्कंटक नहीं जान पड़ता। इसलिए उन्होंने मेरे सामने वैराग्य का निमित्त उपस्थित किया।)

बिलखते हुए नेमी :- जो भी हो। इनके बंधन और क्रंदन का कारण एक मात्र मैं ही हूं। इसका उत्तरदायी भी एक मात्र मैं ही हूं। देखो! कितनी व्याकुलता झलक रही है, उन व्याकुल पशुओं की आंखों में। क्या सुख होगा? सोचो तो हिंसा के इन ब्याहों में। और क्या फर्क पड़ता है कि निमित्त बना है या बनाया गया है। यह संसार स्वार्थमयी है। ये बात तो सत्य ही है। इन पशुओं के बंधन और क्रंदन, ... पशु तो सत्य हीन है। मोहनीय के वश होकर हम संसार में सुख मानते हैं। पर संसार में सुख है कहाँ?

(Music.......)

नेमी :- आज मैं इसी समय अविचल सुख को खोजूंगा। गर्मी, सर्दी, आँधी ओले की ओर न किंचित देखूंगा।

दास :- महाराज! महाराज की जय हो।

क्या हुआ?

Date: 6 / Page no:

दास:- पशुओं का क्रंदन देखकर नेमीश्वर ने वैराग्य धारण कर लिया। और अपना रथ गिरनारी की ओर मोड़ लिया

राजुल: मैंने क्या गलत किया प्रियवर? कि मुझे छोड़कर चले गए। इसका उत्तर देना होगा कि ~~वो मुझे क्यों छ~~ क्यों वो मुझे छोड़कर चले गए।
(राजुल गिर जाती है।)

राजुल की मां:- राजुल - राजुल... मेरी फूलों-सी कोमल राजुल इस आघात को कैसे सहन करेगी। सब जानते थे कि नेमी इसी भव से मोक्ष जाने वाले है। मेरी राजुल को मोह से ~~निश्चित~~ करना। क्या यह उचित था।

राजुल: यदि उन्हे विवाह स्वीकृत नहीं था, तो माँ वो बारात लेकर क्यों आते। यदि उन्हें जाना ही था। तो उन्होंने मुझे पहले स्वीकार क्यों किया। उन्होंने एक बार भी नहीं सोचा कि राजुल का क्या होगा।

राजुल की माँ:- व्याकुल मत हो बेटी। वैराग्य होना तो अच्छा ही है। पर कभी-२ इस दुनियादारी

Date: / / Page no:

में आश्चर्य भी दुखदायी बन जाती है।
नेमिनाथ का वैराग्य हमारे लिए दुःखदायी हो गया।

राजुल:- नहीं माता वो ऐसा नहीं कर सकते। वो भी मुझे चाहते थे। ~~उन्हों~~ क्या उन्होंने एक बार भी नहीं सोचा कि मेरे सपनों का क्या होगा? मेरा क्या होगा?

Date
Page

नेमीनाथ (सपने में)
राजुल इस तरह अधीन होना आत्महित का सदमार्ग दिखाना
रोना, धोना, व्याकुल होना है समस्त कार्य का काम नहीं।
जब मैं बारात लेकर आया तब रागी था अनुरागी था। क्षण में
अध्रुव अनुराग भरा और आज वीतरागी हूँ मैं। मैंने न कोई
धोखा दिया सादी की मैंने हा की थी सब बात इकदम पक्की थी
मन से पूरी तैयारी थी। मगर इस रागभाव का मर जाना ये
कोई असंभव काम नहीं। रागी से वैरागी होना यह तो
कोई अपराध नहीं। न धोखा है न छलप्रपंच इसमे है
कोई पाप नहीं। अब क्या होगा कैसे होगा इसका किसको
भान है।

राजुल -
तो ठीक है मै भी दीक्षा धारण करुंगी आप के पद चिन्हो
पर चलकर आपके आत्मसाथी बनूंगी।

नेमीकुमार -
दीक्षा तो बैराग्य का फल है राजुल ये सच्चा वैराग्य नही है
तुम मुझे पति समझकर मेरी अनुगामी बनना चाहती हो
ये तुम्हारा मेरे प्रति तीव्र मोह है इस बात को समझो
मै तुम्हारा कुछ भी नही मै एक दिगंबर सन्यासी हूँ।

राजुल -
पर हम तो पिछले नौ भवो के साथी है न।

नेमीनाथ -
सम्बधित होना भव से इसमे गौरव की बात नहीं भव का
नाँव

(१)

अभाव करना देवी ये है गौरव की बात नहीं। (ताली ...
ये राग भाव तोड़ो राजुल भव की चर्चा का अंत करो मैं
अधिक कहूँ क्या हे राजुल इस भव के भव का अंत करो।
मैं अधिक ... ... ।

राजुल -
नाथ मैं भी ।

राजुल की माँ -
राजुल। क्या हुआ बेटी।

राजुल - माँ मुझे नेमीश्वर दिखाई दिये। नेमीश्वर।

माँ - नेमीश्वर दिखाई दिये।

राजुल - हाँ वो कह रहे थे मैं अपने में पूर्ण हूँ। तुम भी अपने में पूर्ण हो तुम किसी की कुछ नहीं हो शुद्धात्मा हो अविनाशी हो। पर की आशा छोड़ दो अपने आप को अपनाओ बस अपना ही ध्यान करो।

माँ - सत्य ही कह रहे थे।

राजुल - हाँ सत्य ही कह रहे थे मुझे भी रमस्य संतुष्टी का अनुभव हो रहा है। पर - पर क्या मैं उनके बिना रह पाऊँगी।

गाना - सपने में ... ...

माँ - बेटी जो होना था सो हो गया अब तो धैर्य धरो धैर्य धरो बेटी।

गाना - जो होना ... ...

माँ - राजुल जिस समय जिस कारण जिस विधी से जो होना होता है वैसा ही होता है। अनहोनी कभी नही होती होता वही है जो पहले से सुनिश्चित हो बस हम ही नही जानते। तुम्हे इस महासत्य को स्वीकार करना ही होगा। की जो कुछ हुआ है वो पहले से ही सुनिश्चित था।

राजुल - हाँ माँ। मैने इस महासत्य को स्वीकार कर लिया कि जो होना होता है वही हुआ है। पर क्या करूँ ये भी तो सत्य है कि जब नेमी की याद आती है। तब आपकी सब बाते विस्मृत हो जाती है। मेरा हृदय फटने लगता है चाहकर भी मै उन्हे भूल नही पाती।

माँ - मन को तो समझाना ही होगा। नेमी की परणती शुद्ध हो चुकी है वो अपने आप मे ही लीन है और विकल्पातीत हो चुके है। अब तुम्हे अपने बारे मे विचार करना होगा। जब भगवान के ज्ञान मे एक क्षण वैराग्य की बात आई तो तुम्हारा विवाह किससे होगा। ये भी तो उन्हे पता होगा।

राजुल - नही माता आप ये कैसी बात कर रही है मैं ~~कन से कभी~~ दुबारी शादी नही करूगी

माँ - नही मै पहली शादी की बात कर रहा हूँ बेटी अभी तक तुम्हारी पहली शादी हुई ही कहा है पति पत्नि के सात फैरे पुरे हो जाने पर माने जाते है छः फैरो तक बेटी कुम्हारी रहती है यदि किसी कारण वंश विवाह न हो पाये तो किसी योग्य वर से विवाह किया जा सकता है

(5)

ये तो सर्व मान्य पारंपरा है

राजुलः- परंपरा कुछ भी हो पर अब मे विवाह नहि करना
चाहती हूं

माँ - विवाह नही करना चाहती हो ये तो तुम कहती हो परन्तु
सत्य तो ये है कि अभी नेमी की याद है तो माँ को व्याकुल
हो जाते हो बेटी तुम मे अभी वैराग्य के योग संयम
नही है ऐसे मे विवाह करना ही उचित है

राजुल- नही माँ मुझे विवाह करना निश्चित नही मैं संयम धारण
कर सकती हूं इसके योग मे अपने आप को बनाऊंगी

माँ → राजुल ये इतना सरल नही है बेटी तुम शांति से सोचो
विचारो किसी भी निर्णय पर पहुचाने की जल्दी मत
करो अपने चित को स्वास्थ होने दो फिर भविष्य की
निर्णन करो

गाना . इस - - - - -

(राजुल पिता के साथ जाती है)

राजुल- पिता जी प्रणाम

पिता जी-आओ बेटी . आओ

राजुल- पिता जी मैंने बहुत विचार किया कि मै अब विवाह
नही करूंगी मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं संयम
धारण कर गिरनार जाऊंगी

(5)

पताजी- बेटी तुम गिरनार ही क्यो जाना चाहती हो इसी लिये
ना कि नेमीश्वार भी वहां गए है ना राजुल बेटी ये
तो राग है वैराग्य नहीं राजुल आज

५. काव्य

सीता - हे स्वामिन् यदि आपको मुझे छोड़ना ही था तो किसी आर्यिकाओं के संघ में छोड़ देते अथवा किसी धार्मिक स्थल या तीर्थक्षेत्र पर ही छोड़ देते। वहाँ मैं धर्मध्यान तो करती।

(सीता का गमन)

राम मूर्च्छित हो जाते हैं।

सीता की दीक्षा ⇒

पृथ्वीमति दीक्षा ⇒ अध्यात्मिक डायलॉग
Conversation

राम का पश्चाताप

AMBER_JAIN

आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। आज कल्प पन सत्यो

सीता [जी, मुझे स्वीकार है।] ही सत्य उसकी

करना पड़े तो ~~इससे~~ ~~है~~ स्वामी, मैं पवित्र हूँ अतः तो मुझे आग्नि के

बड़े दुर्भाग्य की बात और ~~ताप~~ का भी भय नहीं। क्या यह सामान्य अग्नि

क्या हो सकती है की लपटे मेरे सतीत्व पर लांछन लगा सकती है। यह मेरी नियति

है स्वामी दूसरी बात भंग नहीं कर सकती क्योंकि धर्म मेरे साथ है और मैं धर्म के

यह भी है कि यदि सीता की अग्नि परीक्षा सत्य। सच्चा

आपको मेरे सतीत्व पर साथी तो धर्म है। "चिर रहक ... "

संदेह था तो (तभी वहाँ से एक मेघकेतु नाम का

तत्काल ही देव सकलभूषण मुनि का केवलज्ञान

अग्निपरीक्षा महोत्सव मनाने के लिए महेन्द्र नाम के

क्यो नहीं ले उद्यान में जा रहा था। तभी उसने अपने

ली? मैं उसी अवधिज्ञान से जाना कि सीता निर्दोष है।

समय अपनी और उसने आग्नि को कमल में परिवर्तित

पवित्रता का कर दिया। और अग्नि परीक्षा सफल हुई।

प्रमाण दे जयजयकार सीता की प्रशंसा

देती।

राम - हे सीते! प्रजाजन को अब तुम्हारे ऊपर पूर्ण विश्वास हो चुका है। ~~आओ~~ वैदेही अब मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ और अग्निपरीक्षा से तुम्हारी निर्दोषता प्रमाणित हो जाने के बाद मैं तुम्हे स्वीकार करने के लिये तैयार हूँ।

सीता → नहीं अब मैं आपके साथ इस राज्य में नहीं रह सकती

राम :- मुझे क्षमा कर दे सीते। मैंने तुम्हारे साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है ~~तुम मेरे साथ महल में प्रवेश करो।~~

सीता :- स्वामी, इसमें आपका नहीं ~~इसमें~~ कोई अपराध नहीं है। यह तो मेरे पूर्व में किये कर्म का ही फल है जो ~~जो करे सो भरे~~ आज मुझे भोगना पड़ रहा है।

AMBER_JAIN

आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। आज सत्य / जन सत्य / ही सत्य प्रमाण

सीता जी, मुझे स्वीकार है।

करना पड़े तो इससे हे स्वामी, मैं पवित्र हूँ अतः तो मुझे अग्नि के

बड़े दुर्भाग्य की बात और का भी भय नहीं। क्या यह सामान्य अग्नि

क्या हो सकती है ताप की लपटें मेरे सतीत्व पर लांछन लगा सकती है। यह मेरी नकी

हे स्वामी दूसरी बात भंग नहीं कर सकती क्योंकि धर्म मेरे साथ है और मैं धर्म के

यह भी है कि यदि सीता की अग्नि परीक्षा। साथ। सच्चा

आपको मेरे सतीत्व पर साथी तो धर्म है।" फिर रहक ...

संदेह था तो (तभी वहाँ से एक मेघकेतु नाम का

तत्काल ही देव सकलभूषण मुनि का केवलज्ञान

अग्निपरीक्षा महोत्सव मनाने के लिए महेन्द्र नाम के

क्यों नहीं ले उद्यान में जा रहा था। तभी उसने अपने

ली? मैं उसी अवधिज्ञान से जाना कि सीता निर्दोष है।

समय अपनी और उसने अग्नि को कमल में परिवर्तित

पवित्रता का कर दिया। और अग्नि परीक्षा सफल हुई)

प्रमाण दे जयजयकार सीता की प्रशंसा

देती।

राम- हे सीते। प्रजाजन को अब तुम्हारे ऊपर पूर्ण विश्वास हो चुका है। ~~आओ वैदेही अब मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ और~~

अग्निपरीक्षा से तुम्हारी निर्दोषता प्रमाणित हो जाने के बाद मैं तुम्हें स्वीकार करने के लिये तैयार हूँ।

सीता ↳ नहीं अब मैं आपके साथ इस राज्य में नहीं रह सकती

राम:- मुझे क्षमा कर दे सीते। मैंने तुम्हारे साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है। ~~तुम मेरे साथ महल में प्रवेश करो।~~

सीता:- स्वामी, इसमें आपका नहीं इसमें कोई अपराध नहीं है। यह तो मेरे पूर्व में किये कर्मों का ही फल है जो ~~जो करे सो भरे~~ आज मुझे भोगना पड़ रहा है।

AMBER_JAIN

श्री

सीता की अग्नि परीक्षा → विभीषण, सुग्रीव, हनुमान कि (Cont)

तीनो मिलकर कहते है कि हे पुरुषोत्तम आप के बिना सीता बहुत दुखी है। आप उसे अयोध्या बुला लीजिए

राम → मैं जानता हूं सीता सती है निर्दोष है। परन्तु मैंने उसे लोकापवाद के कारण घर से निकाला था। मैं उसे वापिस कैसे बुला लूं यदि वह कुछ अपनी निर्दोषिता निर्दोषिता का प्रमाण दे तो मैं उसे अपने घर मे बुला लूंगा।

तीनो आज्ञा स्वीकार करते हुए सीता को पुष्पक विमान में बिठाकर अयोध्या ले आते हैं। तब राम क्रोधित हो उठते है।

राम → हे सीते तुमने मेरे सामने आने की चेष्टा कैसे की? तुम यहां क्यों आई तुम इतने दिन रावण के यहां रही अब मैं तुम्हे घर में कैसे रख लूँ? कैसे मैं तुम्हे निर्दोष मानूं? तुम्हारी निर्दोषिता का क्या प्रमाण है? मैं अपनी

सीता:— तो आप ही बताइये निर्दोषता का प्रमाण कैसे दूँ।

राम - हे सीते! प्रजाजन के समक्ष तुम्हें पवित्रता के लिए अग्नि परीक्षा देनी होगी

(पूजा . . . .)

AMBER_JAIN

महलों में निवास करने वाली, तुम्हारी
ये दुर्दशा देखे हुए!।
हे भ्राता! —— चली गई

लव कुश का दृश्य → लव कुश का जन्म

लव कुश कि शिक्षा

क्षुल्लक श्री सिद्धार्थ के द्वारा लव कुश को ॐ का ज्ञान देना

क्षुल्लक → हे शिष्यों आज हम णमोकार मंत्र की शिक्षा
ग्रहण करेंगे

लव कुश का युद्ध → काव्य

(इसी बीच नारद कि entry) सिद्धार्थ लक्ष्मण से कहते हैं।

(सिद्धार्थ) ~~नारद~~ → हे लक्ष्मण यह तुम्हारे अग्रज भ्राता राम के ही पुत्र हैं। सिद्धार्थ → हे पुत्र! अपने कुटुम्बी जनों पर ये चक्र नहीं चला करते।

राम लव कुश का मिलन → अयोध्या लौट गये।

AMBER_JAIN

(राम का मंत्री परिषद से
सलाह वार्तालाप)

राम => कहिए सेनापति जी मंत्री जी अब
क्या किया जाए?

सेनापति हे राजन! एक राजा का यह
कर्तव्य है कि वह प्रजा के हित में
न्याय करे। राजा का यह दायित्व है
कि वह एक निष्पक्ष निर्णय ले।

निर्भीक दिख रहीं थीं।
स्टेज - सीता व सेनापति का
वार्तालाप - बातों जैसा इशारा
करते हुए)
सीता - हे सेनापति! अवधेश से कहना
कि जिस प्रकार लोकापवाद के कारण
आपने मुझे छोड़ दिया उसी प्रकार
आप धर्म को न छोड़ दें।

सेनापति का वापिस गमन
कुटिया का सीन (दुःखी संगीत)
सीता व वज्रजंघ का मिलन =>
(वज्रजंघ को वृतान्त बताते हुए)

वज्रजंघ => (सोचते हुए) यह तो मुझे अयोध्या
की महारानी जानकी सी प्रतीत हो रही
है
(पास जाकर इस वृतांत
सुनकर) हे भगनी तुम तो

काव्य द्वारा वृतान्त

→ (राम के मन की विडम्बना)

<u>काव्य</u> ⇒

राजा के समक्ष कहने की क्या धृष्टता कहें?

राम

मंत्री

राम

मंत्री

राम

AMBER_JAIN

राजदरबार का दृश्य =>
(राम सिंहासन पर बैठे हुए तथा दरबारियों से वार्ता)

राम :- मन्त्रीवर! प्रजा में सब कुशल मंगल है!

मंत्री (हिचकिचाते हुए) रामराज्य में तो सुख कुशल मंगल ही होगा महाराज। अन्न जल से भरपूर राज्य सर्व सुविधा युक्त है ही और आपके आगमन से प्रजा में आनंद का वातावरण है।

राम :- और आप सभी को किसी भी प्रकार की समस्या!

मंत्री - बीच में टोकते हुए - नहीं महाराज आपके राज्य में किसी चीज (वस्तु) की कमी नहीं।

~~दरबार~~ (राम मन में विचारते हुए) अवश्य ही कोई बात है, जो मेरे (मुझसे) छुपाई जा रही है अन्यथा मंत्रीजण चिंतित नहीं दिखाई पड़ते।
मुझे अवश्य होरहा है

(दरबार समाप्ति की घोषणा।)

- (गुप्तचर का प्रवेश)

राम - कहो क्या समाचार है। मैं क्या

गुप्तचर - (हिचकिचाते हुए) ... मैं क्या कहूँ महाराज? ~~कहना उचित नहीं है~~ परन्तु आपके समक्ष अपने दायित्व को निभाते हुए सुना हुआ वृतान्त कहता हूँ।

कहने ना कहें

AMBER_JAIN

सूत्रधार ⇒ लंका पर विजय प्राप्त कर राम-लक्ष्मण सीता के साथ लंका में प्रवेश कर रहे हैं तथा उनके आगमन की खुशी के उत्साह में प्रजाजन उत्सव मना रहे हैं।

राम-लक्ष्मण सीता का प्रवेश

।स्वागत कार्यक्रम।

बाजार का दृश्य

धोबी-धोबिन का वार्तालाप

लोग ⇒ पराये घर रैन कर कर आई स्त्री को ~~इसको~~ अपने घर में रखना उचित नहीं है।

धोबी ⇒ सत्य ही कहते हैं लोग! (क्रोध में) मैं तुमें ~~शरण~~ अपने घर में शरण नहीं दूंगा।

धोबिन ⇒ मैं (जो) चार दिन रह-कर क्या आई? तो आप अभी चार बात सुना रहे हैं और जो वो अवधकुमारी छह माह लंका में रहकर आई उन्हें ~~सब माफ है। उन्हें कोई कुछ नहीं कहता।~~ (तो) उनके पति ने कुछ नहीं कहा।

~~सूत्रधार~~ - (प्रजा में बात आग की तरह फैल गई)

प्रजा :- वो तो राजा है, पराये घर से आई उन्हें ~~कैसे~~ रख लिया)

(

AMBER_JAIN